गुल्ली-डंडा' कहानी गुल्ली-डंडा नामक भारतीय खेल तथा उसके खिलाड़ियों से सम्बन्धित है। कहानी का आरम्भ गुल्ली-डंडा को खेलों का राजा बताकर उसकी विशेषताओं के वर्णन के साथ होता है। विदेशी महँगे खेलों की तुलना में सस्ते भारतीय खेलों को प्रोत्साहित किया गया है। कहानी के मुख्य पात्र तथा गया को गुल्ली डंडा खेलते तथा लड़ते-झगड़ते वर्णित किया गया है। मुख्य पात्र बीस साल बाद

उसी कस्बे में आता है तथा गया के साथ गुल्ली डंडा खेलता है।

वह गया के खेल में पहली वाली विशेषता नहीं पाता। सोच-विचार के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उसका अफसर होना दोनों के बीच असमानता पैदा कर देता है। गया उसको अपने जोड़ का नहीं मानता। वह खेलता नहीं केवल खेलने का बहाना करता है। कहानी की कथावस्तु सुगठित तथा संदेशप्रद है। आरम्भ से अन्त तक उसमें पाठक की रुचि बनी रहती है। गया तथा लेखक के खेल के साथ कथानक का विकास होता है और अन्त इस मनोवैज्ञानिक सत्य के साथ होता है कि पद और प्रतिष्ठा मनुष्य-मनुष्य के बीच की प्राकृतिक समानता को समाप्त कर देते हैं।

गुल्ली-डंडा' कहानी के पात्र गया का चरित्र-चित्रण

कुशल खिलाड़ी – गया गुल्ली-डंडा का कुशल खिलाड़ी है। गुल्ली को वह सरलता से लपक लेता है। उसका निशाना कभी चूकता नहीं है। यह जिस टीम के साथ होता है उसकी जीत निश्चित होती है। सब उसको अपना गोइयाँ बनाना चाहते हैं।

शारीरिक बनावट – गया दुबला, पतला तथा लम्बा है। उसके हाथ की उँगलियाँ बन्दरों की तरह लम्बी हैं। उसका रंग काला है। वह फुर्तीला है।

आर्थिक स्थिति – गया गरीब चर्मकार है। उसकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं है। वह बड़ा होकर डिप्टी साहब के यहाँ साईस बन

समझदार : गया समझदार है। वह समाज में पद और प्रतिष्ठा का महत्व समझता है। लेखक जब अफसर बनकर लौटता है तो वह उसके साथ अदब का व्यवहार करता है। वह उसके कहने पर खेलता है परन्तु दोनों के बीच का अन्तर नहीं भुला पाता। वह खेलने को दिखावा करता है। डंडा मारने की घटना याद दिलाने पर वह उसको बचपना कहकर भुलाने के लिए कहता है।

संदेश : बीस वर्ष बाद अफसर बनकर जब लेखक कस्बे में लौटा और अपने बचपन के साथी गया के साथ गुल्ली-डंडा खेला तो उसको लगा कि गया में खेल की पहले जैसी कुशलता नहीं है। वह न गुल्ली को लपक पा रहा था, न टांड लगा पा रहा था और न गलत खेल का विरोध कर रहा था। इसके अगले दिन गया के बुलावे पर उसने गुल्ली-डंडा का मैच देखा तो उसने उसके खेल में पहले से भी ज्यादा परिपक्वता पाई। यह देखकर उसने सोचा कि कल गया खेल नहीं रहा था, उसको खिला रहा

था। वह उसको अपने बराबर का खिलाड़ी नहीं मान रहा था। वह उसका मन रखने के लिए उस पर दया करके उसके साथ खेलने का नाटक कर रही था। लेखक उसकी दृष्टि में छोटा हो गया था और वह बड़ा।

कहानीकार ने 'गुल्ली-डंडा' कहानी में इस मनोवैज्ञानिक सत्य का उद्घाटन किया है कि बचपन के समान अवस्था वाले साथियों में बड़े होने पर पद, प्रतिष्ठा, आर्थिक स्थिति आदि असमान होने पर बचपन जैसी समानता नहीं रहती। उनके आपसी व्यवहार में असमानता आ जाती है। लेखक अफसर है और गया मजदूर। यह अन्तर उनके

में बाधक बनता है। गुल्ली-डंडा कहानी का संदेश यही है कि पद, सामाजिक और आर्थिक अन्तर आदि होने के कारण मनुष्य-मनुष्य के बीच की नैसर्गिक समानता समाप्त हो जाती है। उनका आपसी व्यवहार भी पहले जैसा नहीं रहता, उसमें दिखावा और अन्तर आ जाता है। ऐसा होना स्वाभाविक है। बाह्य प्रभाव के कारण प्राकृतिक आचरण मानो नष्ट हो जाता है और बनावटी सभ्य आचरण का जन्म होता है।